

## □ চানকের গবিন্দের পৈঁষ্ঠিক্যমূল্য়:-

পৈঁষ্ঠিক্যমূল্য :-

আগীন খাবতীপ- নাটুওয়াল্কি ইউনিভার্সিটি দুর্ভু-  
ক্ষণে বয়সে অর্ধেক আর্থিক পরিষেবার নাটুওয়াল্কি  
আধুনিকতা, বয়ানুভূতিতে নৃবৰ্ণন, চানকে। নাটুওয়াল-  
কি পৈঁষ্ঠিক্যমূল্যের দ্বন্দ্ব-ধৰ্মাত্মক তত্ত্ব অভিজ্ঞ  
করেন। নাটুওয়াল্কি কিংবালে বিশ্বিত বীকুব্রাহ্মিত বাজনীতি  
বিষয়ে 'চুড়াণ্ডাঙ্গায়' নারেকে চানকে গীতার নাটুওয়াল-  
ক্ষণে মুক্তি পাবে। ইতিবাচক কুটিলগতি, আরোহী ও অতিশ্রিম্প  
পদ্মন চানকে চানকে নাটুওয়াল কিংবালে চুড়াণ্ডাঙ্গা  
নারেকে বিভিন্ন পুরুষ আলোপ কর (বিশ্বিত কর) নব-  
জাগ ঝুল র্বাণেন।

চুড়াণ্ডাঙ্গায় নারেকে পার্শ করে অতিশ্রিম্প  
চানকে উদ্বিগ্নিত আলোপ উপরে রে অভিষ্ঠু বি-  
চুপ্ত কুটিল- আলোপ উপরে তা নীৰ্মল কৃত রণ পুল-  
১. স্বীকৃত বাবনীতিবিদ়:-

চানকে নিলক কুটিলগতি নিমুজ  
অযোগে স্বীকৃত বাবনীতিবিদ়। তিনি বালুবল অপেক্ষা  
সুনিয়ল অযোগ্য কুটিল কুটিল কৃত পরেছে? অম্বত  
প্রচেষ্টাকে পুরুল নিষ্ঠ করেন। বিনা পুরুজ ক্ষেত্র পুরুজ  
চানকে অক্ষমেন্দুকে পুরুজ পুরুজ অক্ষয়েন্দু রেখে চানকে  
ক্ষেত্রক্ষেত্র পুরুজ পুরুজ অক্ষয়েন্দু- তিনির পুরুজ-  
যোন কিংবু পুরুল পুরুজ পুরুজ পুরুজ।

क्षेत्रीयि अस्मिन् पृष्ठायाः संस्कृते देव उल्लङ्घनं अवूद्यावे शुद्धीनीतिः कृष्णव निष्पुर  
प्रदोषा व्याप्ते ३८७ । तस्मात्त्वाच्छ्रेष्ठ वाग् विल, शिल अः  
नीति अवर्ण अपि २५८८ । अगात्तु वाच्यमेव अशुभगीव  
उद्दीपीतिर्हेष्ट, पश्च चक्षुष्ट्वाच्चित्र तत्त्व ज्ञान २५८९, तस्मै  
चक्षुष्ट्वाच्ची विद्यार्थ्यम् अक्षुष्ट्वा कृष्णदेव । “अगात्तु-वाच्य-  
येनाप्यनक्षात्तिसूर्यवर्षान्विष्टिः” । अगात्तु वाच्य २५९०  
इथाच्छ्रेष्ठ तस्मात्त्वाच्च विष्टिः न अगात्तु अक्षुष्ट्वा  
अप्य॒२५९१ इति २५९२ ।

## २. उवर्तागी ओऽस्मैश्चील अस्मैः-

व्याकुलीवास-वास्तु  
शिलन उवर्तागी २५९२ प्रथा ग्रामाण्य वाच्यम्, अनुवाद द्विष्टात्  
मैश्चील अस्मैः । क्षुष्ट्वाच्ची विज्ञाप्त्वा अक्षुष्ट्वा-२५९३-  
अत त्वाच्चित्रे नीनश । अते क्षुष्ट्वाच्ची-२५९४ इलनास्य ग्राम-  
विलन-“अग्ने वाकाविद्यम् अश्विना विष्टिः” ।

## ३. आस्तुष्ट्वा अप्य॒२५९५

चाप्त एवम् द्विष्टात् वाक्नीतिः-  
तेग्नि-विवि-शिलन आस्तुष्ट्वा अप्य॒२५९५ । अहे-विति उप्त-  
विष्टिः वाक्त अप्य॒२५९६ वालशिलन-“आग्ने वैत्रे वास्तु  
विष्टिः॒२५९७ एव वालव धृत्या पद्माविष्टिः॒२५९८- । अः  
एव अपि शिल-२५९९ अप्त्वाप्त्वात्तिर्विष्टिः॒२६० विष्टिः॒२६१”  
- अः एव आस्तुष्ट्वा अक्षुष्ट्वा अव अप्त्वाप्त्वा वाल॒२६२ अप्य॒२६३  
- अप्य॒२६४ अस्तुष्ट्वा अप्त्वाप्त्वा विष्टिः॒२६५ अप्य॒२६६ अस्तुष्ट्वा  
- अप्य॒२६७ अस्तुष्ट्वा अप्त्वाप्त्वा विष्टिः॒२६८ अप्य॒२६९ अस्तुष्ट्वा

## ४. शुद्धिचर विलोप्ता उप्त्वाप्त्वा-

विष्टिः॒२६१ अप्त्वाप्त्वा अप्य॒२६२ अप्य॒२६३  
- अप्य॒२६४ अस्तुष्ट्वा अप्त्वाप्त्वा विष्टिः॒२६५ अप्य॒२६६ अस्तुष्ट्वा  
- अप्य॒२६७ अस्तुष्ट्वा अप्त्वाप्त्वा विष्टिः॒२६८ अप्य॒२६९ अस्तुष्ट्वा

‘অপুর্ণা’ বিষ্ণু। এই সূর্যোদয় নিরপেক্ষ কান্তিক। আশুব্ধিতা  
যে ক্ষেত্র পৃথিবীতে - কৃষ্ণীয় শুভলীপ। দেশপুরু পরিচ্ছন্ন  
ক্ষেত্র তিনি জ্ঞেন সূর্যোদয় ক্ষেত্র ক্ষেত্র। কান্তি নিম্নোক্ত  
জ্ঞানসম্পদ, অধিকার্থি, মুগ্ধকৃত্যু - উচ্চারণে প্রত্যুক্ত  
ক্ষেত্রে ও - পাঠেরি - তার আশুলো প্রলৈ প্রসূ ক্ষেত্রগুলি  
ক্ষেত্র।

### ৫. দৃঢ়বিতা:-

অজ্ঞতা দৃঢ়বিতা ক্ষেত্র হিল - “বাস্তু; শুভ্য; পদ্ম  
বিষ্ণু; দিঘ্যাদ্য পদ্মসূচ” এই মৌতিত ক্ষেত্র। অন্তর  
দৃঢ়বিতা গুলি তাৰ বৰ্ণনাৰে, তাৰ হাঁড় কৰিব ক্ষেত্ৰে  
বাস্তু - চিৰ অজ্ঞাত। হাঁড় আনন্দগ্রহ দৃঢ়বিতে দলে পৰ  
পৰ বৰ্ণ পড়েছিল বৰ্ণনামৰ কৌশল। ক্ষেত্রে দৃঢ়বিতা  
হাঁড় - বাস্তু মোৰ পাতিললিত দৃঢ়বিতু দৃঢ়বিতু - ইত্যা ক্ষেত্র ক্ষেত্ৰ  
ও। অজ্ঞন নিৰ্ভুল, অজ্ঞত বাস্তু নিখৈকেন্দ্ৰীয়, তাৰ  
দৃঢ়ল সেৱ ক্ষেত্র দৃঢ়বিতু - তা কৰ্ত্তব্য পৰ্যবৰ্ধিতাৰূপ  
ক্ষেত্র নিখৈ অস্মকে বলোৱ - ‘অজ্ঞতি ঘনু রেণু চিল্লঃ’।  
কৈপুৰুষ, কৈলাহি ঘনৈতায়ুলিলৈ? তাৰ ক্ষেত্ৰ।

### ৬. পৰজুৰ ঝীঁঝুজাৰা ঝুমুনীপুৰুষ

ক্ষেত্রে তিকে অজ্ঞতা  
শুনিবিল রূপত পদকৰ শুনতে অক্ষয় ক্ষেত্ৰে,  
অতিপুৰুষ এ - অমাত্যোক্তাঙ্গতে তিনি অক্ষীবৃক্ষপতি  
ক্ষেত্ৰে লক্ষ হোৱ প্রেছুজেক্ষিয় অৰূপাল ক্ষেত্ৰে ক্ষেত্ৰ  
ও। ক্ষেত্ৰে অস্মক অস্মক, ক্ষেত্ৰে তিকি অক্ষয়কীল ক্ষেত্ৰ  
ক্ষেত্ৰে অল ক্ষেত্ৰে অস্মক অস্মক অৰূপালক্ষে তিনি

ବିଭିନ୍ନ ଆଶ୍ରମଗେ ଅର୍ଦ୍ଧ ତୁଳନା କରିବାକୁ

“ତୁଳାଙ୍କୁ ସଂରକ୍ଷଣ କରିବାକୁ ହାତେ”

କିମ୍ବା “ତୁଳାଙ୍କୁ ପୁରୁଷରେ ବିଭିନ୍ନ ବିଭିନ୍ନ ବିଧାରୀ”

ଏତେ ଏହା ନାମରେ ହେଲାଏ କିମ୍ବା କିମ୍ବା ? - ୩୮।

୬. ତୁଳାଙ୍କ କାମକ : -

ତୃତୀୟାଧିତ ଚନ୍ଦ୍ରମଣ୍ଡଳ ବାଜ୍ୟ ପ୍ରକଳ୍ପ  
ଆୟକ ରଖିବା ଚାବନ୍ତୁ, ତାହା ଠାର ଆଜାରେ ବାଜ୍ୟ କରି  
ଆଏନା । ତିନି ଆଜାର ଅର୍ଜନେ ନକରି କାହିଁ ଦେଖିବେ,  
ତୁଳାଙ୍କ ନିରୋଗ, ରାଜକର୍ମକାରୀର ଗୁଣ ଗିରିବା କୁଣ୍ଡଳ  
ତୁଳାଙ୍କ ଆଯକେ ପାଇଁ ଛାପ ବେଶିଲା ।

୭. ତୁଳାଙ୍କାରୀ : -

ଚନ୍ଦ୍ର ହିଲାର କେବେହିଲ କିମ୍ବା ? ଅବି-  
କାରୀ । ଚନ୍ଦ୍ରଙ୍କୁ ଅଳକ କାହିଁର ପେଣ୍ଟନ ହିଲ ହୁଏବ  
ବାବନେତିକ ଅଳକ । ଆତିପାଞ୍ଚ ଦାଙ୍ଗାରକ ପୁଣିବି ଲାକ୍ର  
ଆଗିରେ ଉତ୍ଥାନ କାନ୍ଦେଇ ଦେଖିବୁ ବା ଅଜ୍ଞାନ ନାହିଁ, ପୁଣିବି  
ପୁଣିବି ଲାକ୍ର କାହିଁ କାହିଁ କାହିଁ ? ଅଜ୍ଞାନ ମାତ୍ରାମାନିମାନ  
ଠାର ଅଭିଭାବ ହିଲ । ତିନି ଚନ୍ଦ୍ରମଣ୍ଡଳ ଅର୍ଦ୍ଧ ଠାର କାହିଁ  
କଲାଇବ କାହା ଉପରୁତେ ଆଜାରେ ମିଥ୍ୟ କାହିଁ କାହିଁର ।

୮. ଆରମ୍ଭନାମାନିକ ଭାବାପିମ ବ୍ୟବହାର :

ଅଭିଭୁତ କାଶକୁ ଆସ,  
ଦୂର, ଦୂର ଓ ଦୂର ଏହି ନୀତି ଚନ୍ଦ୍ରଙ୍କୁ କୁବୀରେ ଅଭି  
ବିପୁନତ୍ୟ ହିଲ । ତିନି ଜାନତେ ଏହି କୋଣ ପାଗିଶିତିରୁ  
ଦୂରେ ନୀତି ଆରମ୍ଭନାମାନିକ କରିବି ରୁ । ଠାର ମିଥ୍ୟକାର  
କଳା, ଚନ୍ଦ୍ରମାନାମାନିକ ଆଜିକ ବିର୍ଦ୍ଦଳ ଶୁଣାନ୍ତି ତାହାର  
ମାତ୍ରାମାନିକ କାହିଁ କାହିଁ ନାହିଁଲାଗି ତାହା ଭୁଲିଲା  
ଏହି ଆରମ୍ଭନାମାନିକ ମିଥ୍ୟକାର ବ୍ୟବହାର ।

## ୭. ଅଭିନାସିଷ୍ଟନ୍ତା।

କୁଣ୍ଡଳ ଅଭିନାସିଷ୍ଟନ୍ତା ପାଇଁ ମହାଦେଵ

ଶିଳାତ । କାବ୍ୟରେ ଏହାଙ୍କିମାତ୍ର କିମ୍ବା କିମ୍ବା କୁଣ୍ଡଳାଷ୍ଟ୍ରୀ ଉଚ୍ଛବିତ କାଲାଙ୍ଗ୍ରେ ଥିଲା  
ନାହିଁ । କୁଣ୍ଡଳ ଅଭିନାସିଷ୍ଟନ୍ତା କୁଣ୍ଡଳାଷ୍ଟ୍ରୀ  
ଦେଇ ଏହା କୁଣ୍ଡଳାଷ୍ଟ୍ରୀ-କଲାନ୍ତି ଅତ୍ୟ କାହାରଙ୍କିମାତ୍ର

ଦୀର୍ଘାଙ୍କ କବିତା ପରିବର୍ତ୍ତନାରେ

ଶୁଣି - କାବ୍ୟରେ କାଣ୍ଡଳିକୁ / କାଣ୍ଡଳିକା କାଣ୍ଡଳା,

ଶିଳାଜା, ଏ ଆଜାଦ ଏବେ କାଣ୍ଡଳା / ପାହିକାରେ

କାଣ୍ଡଳା ପାପ - କୁଣ୍ଡଳାଷ୍ଟ୍ରୀ କାଣ୍ଡଳିକାରୀ,

ଅଧ୍ୟ ଶିଳାଜା କାଣ୍ଡଳାର କାଣ୍ଡଳା କବିତାରେ

ନାହିଁଲେ - କିମ୍ବାଦାଖାତେ - ଏହା କାଣ୍ଡଳିକା,

କାଣ୍ଡଳାରେ - କାଣ୍ଡଳାକାଣ୍ଡଳା, କାଣ୍ଡଳିକା କାଣ୍ଡଳା,

ଶିଳାପର୍ବ. କାଣ୍ଡଳାକିମିର୍ଜିତାମୁଁ, ଅଧ୍ୟ କାଣ୍ଡଳାର କାଣ୍ଡଳା

କିମିର୍ଜିତ ଏହା କାଣ୍ଡଳା କାଣ୍ଡଳା କାଣ୍ଡଳା କାଣ୍ଡଳା

କାଣ୍ଡଳାରେ ।

e. शुद्धाराष्ट्रां नाटेक्षे विभेदश्च या देवकिः ।

हृषीक्षः-

क्लिन्दामेऽत्य शुद्ध एवन् शुद्धेऽपाप्ति-  
तिर्तु उपर्युक्तमयं पाण्डित्यं रुद्धं तेजनि कविश्चित्तिर्तु  
परिवर्तने कविष्ठेव अस्य पाण्डित्यं अमृत्युं अर्कव शुद्धै।  
नाटेक्षाव शुद्ध विकाशान्ते अर्थे शुद्धेऽप्य एक अठिनिर्विष्ट । मिळ  
चतुर्थ अथात्प्रपञ्चित्यां अन्तर्ब्राह्मनीति-तथा शूर्णीतिर्तु  
अस्त्रप्रश्नो नाटेक्षाव विकाशान्ते शुद्धाराष्ट्रां नाटेक्षे  
उत्तराकृत्यन् । तिष्ठपूरप्तु आपे आपे विकाशान्तेनाटेक्षे  
विज्ञे वैविष्टेत्युत्तु परिवर्तिर्तु कर्त्तव्यान् । पापं शूलं नारेषो  
त्रैषिद्यपूर्वं इत्यादेः । नीज्ञ नाटेक्षेव गिर्विष्टका विकिष्टे  
आनोन्मा चक्रांशक- ॥

1. हाटेना अर्थाः-

आश्चर्य नाटेक्षेत्तु विद्याने व्यज्ञनीय,  
विद्याने शुद्धाराष्ट्रां नाटेक्षे उत्तरात्यर्थान् । नाटेक्षे  
वृष्टेव एव वैविष्टेत्युत्तु शूलात् शूलात् शूलात् शूलात्  
पापां पापां ते । विश्वास वाचनीतिविद्युत्तु विज्ञेत्तु  
वाक्यमेय शूर्णीतिर्तु ते शूर्णीतिर्तु शूर्णीतिर्तु ते शूर्णीतिर्तु  
ते शूर्णीतिर्तु । शूर्णीतिर्तु कविः कविः अर्कं अर्कम् अर्कम् अर्कम्  
ताटेक्षे अर्थात् नपु । अर्थात् वैविष्टेत्युत्तु शूलात् शूलात् शूलात्  
ताटेक्षेव विद्यानो विज्ञेत्तु ।

2. विश्वास विद्यीत रुद्धना:-

नाटेक्षेव कविष्टीत्युत्तु शूलात् शूलात्  
एव विद्यात्तु बन्न नाटेक्षे विश्वास विश्वास विश्वास

२८५ शार्दुलवर्षा विहृष्णु गुप्तिनि पाठ्यक अपादन्तिक  
पविष्टुत वाऽग्नि तिज्ज्ञ अथप्रश्नद्वा तिर्थी १०। एवम्  
देखिष्य त्य उत्तरे देवतास्तुतास्तु इति वृत्तां वाचो  
विहृष्णु तु तिर्थी देवतापितृ लक्ष्मी वृत्तां वृत्तां। पाठ्यै श्रू  
तादेव एकस्मय विभागात् अवश्यम् अस्ति त्वं।

### ३. नाथिना ओ-श्रीतिर्थविशेष वक्तव्यः-

अवश्य नामेतत्त्वान् ताप्तिन्  
त्वे अवलभ्यते कारु चूष्टाव, अस्ति वृत्तेण देवता आविष्टवत्त्वा  
वृत्तां वृत्तां तात्त्वानि नामित्विशेष वक्तव्यात् अल्पात्  
पात्री विआवे नामेतत्त्वां चक्रवाचेष्ठ अस्ती १० अवश्यावत्त्वां वृ  
त्तां अवश्यार्थे अवश्येत्प्राप्तानि त्वा नामानि पाठ्यै नामेतत्त्वां  
देवतास्तु इति । अभाव्य वृत्तां श्रीर्थे वृत्तां वृत्तां  
श्रृंगे, दृष्टिपु आद्याल २८५ अस्ति अप्यादे अविहृष्णु ।

२८६ तेजस्तु नामेतत्त्वां आत्मा नामावाप्ता  
पतितज्ञ वृत्ते नामेतत्त्वां श्रीतिर्थविशेष तात्त्वां विशेष  
अविशेष तात्त्वां ।

### ४. नवात्मा श्रीयुक्तं-

आविष्ट्य नामेतत्त्वां वृत्तां— दृष्टिपु,  
वर्वेष्ट चूष्टां यज्ञादेवापिलिप्तवः । किञ्च नामेवारथा एव तिर्थी १०  
१२२२ अस्ति अवश्य तात्त्वां तात्त्वां वृत्ते, वृत्ते, वृत्ते विशेष  
श्रृंगे १० दृष्टिपु वृत्तां तात्त्वां विशेष एव तात्त्वां  
तात्त्वां वृत्तां विशेष एव तात्त्वां विशेष एव तात्त्वां  
वृत्तां वृत्तां विशेष एव तात्त्वां विशेष एव तात्त्वां  
वृत्तां वृत्तां विशेष एव तात्त्वां विशेष एव तात्त्वां

## ৫. ধার্মনাব অঞ্চলিক সংগঠন (Unity of Dharma) :-

নাটকে কিংবদন্তি  
অসমৰ প্রান্তীয়ৰ সাৰ্থক সংগঠন

"আঃ। এ প্ৰথা আৰি পিলুতে দ্বিমতিভিতুমিতি কোঢ়া।"  
চানক্যের একি জনক নাটকে পৰিবেশৰ পক্ষে দলৰ পক্ষী  
হৈপৰে প্ৰতিপক্ষ তৰাত্মক হাঙ্গমেৰ পৰাজয়ে (নাটকৰ পক্ষ  
দলৰ পক্ষী, কৰ্তৃ একে বাড়িয়ে ঘৰনা অনুভৱ কৰিবি। এই নাটকে  
নাটকৰ উপর দ্বারা পৰিবেশৰ ও অসমৰ চৰিত্ৰে দৈপ্যমানৰ  
কেলকুতু মূল অমাশুভ্ৰাঙ্গভূতু অভী কিয়াৰে বিমুক্ত  
হৈ। অৰ্থাৎ দানন্দন মৰণকৰি পৰি পৰাজয়ৰ কলভো  
হুকুম, কৰ কৰা অৰ্থে নাটকৰ অন্তৰ্ভুক্ত কোৱা হৈলৈ  
হৈলৈ।

## ৬. দৃষ্টিভিত্তিৰ অধীনিজাতি:

আম, কালিদাস প্ৰমুখ নাটকৰ  
জৰুৰ নাটকেয়ে - অধীনিজাতিৰ চৰিত্ৰ দৈৰ্ঘ্য দিই দুঃসূৰ  
কৰ, কৃতাৰ। অৰ্থাৎ পাণ্ডিত আৰম্ভুৰুচি দুঃসূৰ অধীন  
হৈপৰে কৈ পৰি আছে অৰ্থাৎ কৃতাৰ। অৰ্থাৎ পাণ্ডিত  
পৰিকল্পনাৰ বৰ্তমান আৰু মাঝে মাঝে কৈ কৈ দুঃসূৰ  
এই গোপনৰ বৃত্তিপূৰ্ব হৈলৈ নাটকৰ অধীনিজাতিৰ কৃতাৰ দুঃসূৰ  
হৈলৈ নিৰ্ভৰ কৰে।

## ৭. চৰিত্ৰ চিত্ৰণ:-

নাটকৰ কিংবদন্তি ভূক্তিৰ নাটকৰ  
চৰিত্ৰ চিত্ৰণ বিভিন্ন অৰ্থাৎ স্থানৰে জৰুৰত এই  
নাটকে - একটি চৰিত্ৰ অসম, পশ্চিম চৰিত্ৰ অবিদৰ্শনৰ জৰুৰ-  
তি - হৈপৰে। ক্ষেত্ৰস্থৰ জাতিসমূহৰ ভলিপৰ্যেতু -  
মাত্ৰকৰ জাতিস্থৰ জৰুৰত উভয় উভয়ৰূপ দৈপ্যমানৰ

କବେଳେନା ଚାନ୍ଦୁ ଓ ଗଣ୍ଡିଆ ଫେରୁ ଟାକିଅଟେ ନାହିଁଲେ ଝୂଲ ଝୂଲୀ-  
ନୀତିର ଅବଜା | ଚାନ୍ଦୁକୁଠେ ଝୁକ୍କାବାବୁଛିଯେ ନାହିଁଲେ କଲାମ  
ବାବୁକୁ ପ୍ରତିନିଧିକ କଲାମ ଥିବା । ଟାକିଅଟୁ ଲିବ ଏବା  
ବିଜବନ ଦାବା ଥିଲାଏ କୁଠେ ଅତ ଆଜାନ ଉଠିଦୋପିଲେ  
ପରେବୁ ଝୁକ୍କିଶୁଲି କିଣ୍ଠିବ ଅପା ପରେବୁ କୁଠେ କିମ୍ବା ଏବା  
ତା ନାହିଁଲା କୌଧିପୁରେନା ।

#### 8. ସିର୍ବାଙ୍ଗୀ ଉତ୍ତରାବି ବ୍ୟବଜ୍ଞାନ:-

ଏହି ନାହିଁଲା ଝୂଲ ବିକେଟ୍  
ଏକ ରାଜନୈତିକ ବିଚକ୍ଷଣତା । ଏଥାନେ ନାହିଁକାଳୁମିଳିବୁ  
ବିର୍ମାନୁଗାମେର ପ୍ରତି ଆବଶ୍ୟକ ପାଇନି । କୈନ, ବୋଦ୍ଧ, ବ୍ରାହ୍ମଚ  
ଅକ୍ଷାରେ ମନ୍ଦିର ବିଭାଗ ପାଇଲାବି ଏହା ଆପଦିନ ନାହିଁଲିବି ।  
ଏଥାନେ ଦାସ-ପୁଣ୍ୟ ବିଦା ଏମେହି କାନ୍ଦମିଳିଲେ ଧିତେ ।  
ଆଜିକେ ରାଜନୈତିକତାର ଅନ୍ତି ଜୀବନକୁ ଝୂଲ ବାନେ ଶିଳ୍ପ  
ଆଗ୍ରହିନିଙ୍କାଲେ ସିର୍ବାଙ୍ଗୀ ଉତ୍ତରାବି ଏହି ନାହିଁ ନାହିଁ ସାପରାମର୍ଦ୍ଦି ।

#### 9. ଝୂଟେନୀତି ଦ୍ୱାରା:-

ଏହି ନାହିଁ ଅରତ ଖାସି ଚାନ୍ଦୁ  
ବାବୁମେ ଭରକୁ ଝୂଟେନୀତିମୁକ୍ତ ଦ୍ୱାରା କୁଠେ କାହିଁ  
ଥାଏ ଅଭୂର୍ବି ଦାବା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଉଠିଦୋ କୁଠେ ଅଭାବେ  
ଝୂଟେନୀତି ଏହାର୍ଥେ କବ୍ୟ / ଚାଲୁକୁ ଝୂଟେନୀତିରୁ କାହାର  
ଅବଶ୍ୟକ ଅଭ୍ୟାସ / କଥ / ରାଜ୍ୟ / ଧ୍ୟାନକୀୟା ଅବଶ୍ୟକ  
କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା  
ମଧ୍ୟ । ୧୨ ମାତ୍ର କାହାରୁ ନିର୍ମଳ ଜୀବ / ଏହି କବି କାହାରୁ ପାପନାହ  
ଦୀର୍ଘ ଜିବି, ଜ୍ଞାନରୁ ଏହା କିମ୍ବା / କାହାରୁ କିମ୍ବା କିମ୍ବା  
କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା କିମ୍ବା

ମେଣ୍ଡ ମିଆର ଅକ୍ଷୟୁଟ ରାଜନୀତି ଦୈଲ୍ଲୋ ମିଳିଗୁ ଥିଲା । ତମାତୁ  
ରାଜଧାନୀ ମାତ୍ର ହୁଏନୀ ତମିଲ୍ ଅକ୍ଷୟୁଟ କଣ୍ଠେ ମିଆରାମୁଖ  
ତଥି ଶବ୍ଦର ଥିଲା । ତଣେ ଲିଖିଲା ଅମ୍ବାଯ ହୁଏ ଅତ୍ସାଙ୍ଗ କୌଣସି  
ରୂପ - 'କଥା', ଜୀବମିଳିଲି ଛନ୍ଦକାଳିବିଦି । ୨୩ ତିଥିରେକାହାନ୍  
ମାଲି - ବୀକୁଳମ୍